# उपभोक्तावाद की संस्कृति (श्यामाचरण दुबे)

## पाठ का परिचय

श्यामाचरण दुबे विरचित पाठ **'उपभोक्तावाद की संस्कृति'** फीचर विधा की रचना है। इसमें लेखक ने बाज़ार की गिरफ़्त में आ रहे समाज की वास्तविक स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है। उपभोक्तावाद की इस संस्कृति के पीछे हमारे भागने का मुख्य कारण उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापनों की चमक-दमक है। हम इस चमक-दमक में खोकर उन वस्तुओं की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते। आज समाज का संपन्न और अभिजातवर्ग प्रदर्शनूपर्ण जीवन-शैली अपना रहा है, जिसे सामान्यजन भी ललचाई दृष्टि से देखता है और वैसी ही जीवन-शैली को अंगीकार करने का प्रयत्न करता है। यह मानवीय सभ्यता के विकास की सबसे शोचनीय स्थिति है, जिसका मूलभूत कारण उपभोक्तावाद है। उपभोक्तावाद अर्थात् दिखावे की संस्कृति के दुष्परिणामों का विवेचन करते हुए यहाँ यह भी भली-भाँति स्पष्ट किया गया है कि ज़्यों-ज़्यों समाज में इस संस्कृति का विस्तार होगा, त्यों-त्यों समाज में सर्वत्र अशांति का विषमता (असमानता) का प्रचार-प्रसार होगा। इस दृष्टि से यह संस्कृति के लिए घातक ही है।

## पाठ का सारांश

प्रसिद्ध समाजविज्ञानी श्यामाचरण दुबे द्वारा रचित निबंध 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' का सारांश निम्नलिखित है–

**उपभोक्तावाद और बदलती जीवन-शैली**–हमारे जीवन जीने के ढंग में धीरे-धीरे बदलाव आता जा रहा है। उपभोक्तावाद हावी होता जा रहा है। चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर ज़ोर है। हमने उत्पादों के उपभोग को ही 'सुख' मान लिया है। उपभोग के हम अभ्यस्त हो गए हैं और हम उनके पूरी तरह दास हो चुके हैं।

**विलासितापूर्ण सामग्री : प्रचार और प्रसार**–आज सारी दुनिया एक बाज़ार में बदल रही है। बाज़ार में विलासितापूर्ण सामानों की भरमार है। उत्पादों के आकर्षक विज्ञापन उपभोक्ताओं को लुभाने में एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाए जा रहे है। टूथपेस्ट हो या टूथब्रश या फिर कोई सौंदर्य प्रसाधन, सभी की विशेषताएँ बार-बार प्रचारित-प्रसारित की जा रही हैं। नए-नए विज्ञापन आ रहे हैं। सब नए-नए तरीके निकालकर लुभाने में लगे हैं। कोई आधुनिकतम तकनीक और गुणवत्ता का कमाल बताने में लगा है, कोई ऋषि-मुनियों का नाम लेकर पारंपरिक शुद्धता का बखान करता है और कोई फिल्मी सितारों की लोकप्रियता को भुनाता है

**फैशन की होड़**–सुंदर दिखने की चाह में सौंदर्य प्रसाधनों के प्रयोग की होड़ लग गई है। संभ्रांत परिवारों की महिलाओं में तो इनके लिए एक पागलपन सवार है। 30-30 हज़ार रुपये की सौंदर्य सामग्री उनकी ड्रेसिंग टेबल पर एकत्र हो जाती है। पुरुषों में भी यह प्रवृत्ति तेज़ी से पनप रही है। वे भी अब साबुन-तेल से आगे बढ़ गए हैं। आफ़्टर शेव लोशन और कोलनो लगाने लगे हैं। जगह-जगह नए-नए डिजाइनों के वस्त्र बेचने वाले बुटीक खुले गए हैं। घड़ियाँ समय देखने के लिए नहीं, शान दिखाने के लिए पहनी जाती हैं। लोग लाख-डेढ़ लाख रुपये तक की घड़ी खरीदने लगे हैं।

**खरीदारी : प्रतिष्ठा का मुद्दा**–लोग आज खरीदारी आवश्यकता के लिए नहीं, प्रतिष्ठा (संपन्नता) दिखाने के लिए करने लगे हैं। म्यूजिक सिस्टम हो या कंप्यूटर, बहुत-से लोग दिखावे के लिए ही इन्हें खरीदते है खाना है तो पाँच सितारा होटल में। अस्पताल जाना है तो पाँच सितारा नर्सिंग होम में। बच्चों की शिक्षा के लिए भी पाँच सितारा स्कूल। यहाँ तक कि लोग पैसे के बल पर अंतिम संस्कार का भी शानदार प्रबंध करने लगे हैं।

**उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार**–उपभोग की वस्तुओं के प्रति झुकाव कोई अनहोनी बात नहीं है, किंतु जो स्थिति आज बनी है वह उपभोक्तावादी समाज की एक झलक प्रस्तुत करती है। इस संस्कृति का जनक एक विशिष्ट समाज है, परंतु यह भी सच है कि सामान्यजन भी इसे ललचाई दृष्टि से देखता है।

**उपभोक्तावादी संस्कृति : प्रसार के कारण**–उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार सामंती संस्कृति के कारण हो रहा है। स्वतंत्र भारत में आज भी सामंती तत्त्व सक्रिय हैं। केवल सामंत बदलते हैं, व्यवसथा नहीं। हमारी सांस्कृतिक पहचान, हमारी धार्मिक आस्थाएँ, हमारे जीवन-मूल्य सब धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। हम पश्चिमी संस्कृति को श्रेष्ठ मानकर उसका अंधानुकरण कर रहे हैं। आधुनिक कहलाने की झोंक में हम ऐसा सौदा कर रहे हैं, जो हमारी प्रतिष्ठा को मटियामेट कर रहा है। हमारी सांस्कृतिक पकड़ कमजोर हो गई है। यह भी एक कारण है कि हम दिग्भ्रमित होकर इसकी भरपाई किसी और के निर्देशन में किए जा रहे हैं, जो हमारी ज़मीनी सच्चाई से अलग है। विज्ञापन और प्रचार-प्रसार की शक्तियाँ हमें सम्मोहित कर रही हैं।

**उपभोक्तावाद का दुष्परिणाम**–उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हमारे सीमित संसाधनों का अपव्यय हो रहा है। सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त होता जा रहा है। परिवारों के जीवन-स्तर का अंतर अशांति को बढ़ा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् विकास के समपने टूट रहे हैं। मर्यादाओं की उपेक्षा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जीवन व्यक्तिवादिता को समर्पित होता जा रहा है। अपने इतिहास और संस्कृति से लगाव कम हो रहा है। भारत अपनी गरिमामयी पहचान खोता जा रहा है। भोग और उपभोग की आकांक्षाएँ आसमान को चीरती-सी लगती हैं। उपभोग को साध्य मान लिया गया है।

**उपभोक्तावाद : एक बड़ा खबरा**–गांधी जी ने कहा था कि हम सब ओर से स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभाव को अवश्य स्वीकारें, किंतु अपनी बुनियाद न छोड़ें। उपभोक्तावादी संस्कृति हमारी इसी नींव को चुनौती दे रही है।

## भाग-1

### (बहुविकल्पीय प्रश्न)

# गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

**निर्देश**–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

**(1)** धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन-शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन-दर्शन-उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर ज़ोर है चारों ओर। यह

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्पादन आपके लिए है; आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग-भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए हैं, पर आप यह भूल जाते हैं कि जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

**1. कौन अपना वर्चस्व स्थापित कर रहा है–**

(क) एक व्यापारी (ख) एक राजनेता
(ग) एक नयी जीवन-शैली (घ) एक कलाकार।

**2. कौन-सा नया जीवन-दर्शन आ रहा है–**

(क) समाजवाद का दर्शन (ख) मार्क्सवाद का दर्शन
(ग) उपभोक्तावाद का दर्शन (घ) भौतिकवाद का दर्शन।

**3. किस चीज़ को बढ़ाने पर जोर है–**

(क) रोज़गार को (ख) शिक्षा को
(ग) उत्पादन को (घ) आयात को।

**4. किसकी व्याख्या बदल गई है–**

(क) धर्म की (ख) सुख की
(ग) दुःख की (घ) कर्म की।

**5. हम किसको समर्पित होते जा रहे हैं–**

(क) देश को (ख) धर्म को
(ग) उत्पाद को (घ) समाज को।

**उत्तर–** **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ग)।

**(2)** विलासिता की सामग्रियों से बाज़ार भरा पड़ा है, जो आपको लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती हैं। दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को ही लीजिए। टूथ-पेस्ट चाहिए? यह दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, यह मुँह की दुर्गंध हटाता है। यह मसूढ़ों को मजबूत करता है और यह 'पूर्ण सुरक्षा' देता है। वह सब करके जो तीन-चार पेस्ट अलग-अलग करते हैं, किसी पेस्ट का 'मैजिक' फ़ार्मूला है। कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है, कोई ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृति तथा मान्य वनस्पति और खनिज तत्त्वों के मिश्रण से बना है। जो चाहे चुन लीजिए। यदि पेस्ट अच्छा है तो ब्रुश भी अच्छा होना चाहिए। आकार, रंग, बनावट, पहुँच और सफ़ाई की क्षमता में अलग-अलग, एक से बढ़कर एक। मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए माउथ वाश भी चाहिए। सूची और भी लंबी हो सकती है पर इतनी चीज़ों का ही बिल काफ़ी बड़ा हो जाएगा, क्योंकि आप शायद बहुविज्ञापित और कीमती ब्रांड खरीदना ही पसंद करें।

**1. बाजार किससे भरा पड़ा है–**

(क) खिलौनों से (ख) विलासिता की सामग्रियों से
(ग) मनुष्यों से (घ) फलों और सब्जियों से।

**2. विलासिता की सामग्रियाँ क्या करती हैं–**

(क) हमें लुभाती हैं (ख) हमें डराती हैं
(ग) हमें धमकाती हैं (घ) हमें दुःख देती हैं।

**3. टूथ-पेस्ट के बारे में कहा जाता है–**

(क) यह दाँतों को मोती-सा चमकाता है
(ख) यह मुँह की दुर्गंध हटाता है
(ग) यह मसूढ़ों को मज़बूत करता है
(घ) उपर्युक्त सभी।

**4. पेस्ट अच्छा है तो उसके साथ क्या अच्छा होना चाहिए–**

(क) स्वाद अच्छा होना चाहिए (ख) रंग अच्छा होना चाहिए
(ग) ब्रुश अच्छा होना चाहिए (घ) खुशबू अच्छी होनी चाहिए।

**5. मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए क्या चाहिए–**

(क) लौंग (ख) इलायची
(ग) माउथ वाश (घ) इनमें से कोई नहीं।

**उत्तर–** **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(3)** हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें, परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ़्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य-निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी।

**1. किसका अवमूल्यन हुआ है–**

(क) परंपराओं का (ख) आस्थाओं का
(ग) कविताओं का (घ) भावनाओं का।

**2. आस्थाओं का क्या हुआ है–**

(क) उत्थान (ख) पतन
(ग) चलन (घ) क्षरण।

**3. हमारी नई संस्कृति कैसी है–**

(क) स्वार्थ की संस्कृति (ख) परमार्थ की संस्कृति
(ग) अनुकरण की संस्कृति (घ) उधार की संस्कृति।

**4. हम किसकी गिरफ़्त में आते जा रहे हैं–**

(क) शत्रुओं की (ख) व्यापारियों की
(ग) छद्म आधुनिकता की (घ) विज्ञापनों की।

**5. हमारा समाज कैसा होता जा रहा है–**

(क) स्व-निर्देशित (ख) उदासीन
(ग) अन्य निर्देशित (घ) स्वाधीन।

**उत्तर–** **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(4)** अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है, जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक असिमता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़?

**1. किसका घोर अपव्यय हो रहा है–**

(क) धन का (ख) अन्न का
(ग) सीमित संसाधनों का (घ) हमारी शक्ति का।

**2. पीज़ा और बर्गर को लेखक ने क्या कहा है–**

(क) पौष्टिक खाद्य (ख) कूड़ा खाद्य
(ग) स्वादिष्ट खाद्य (घ) श्रेष्ठ खाद्य।

**3. दिखावे की संस्कृति के फैलने से क्या होगा–**

(क) सामाजिक अंशाति बढ़ेगी (ख) सामाजिक शांति बढ़ेगी
(ग) सामाजिक समृद्धि बढ़ेगी (घ) सामाजिक पतन होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. **उपभोक्तावादी संस्कृति का क्या परिणाम हो रहा है–**
   (क) मर्यादाएँ टूट रही हैं
   (ख) नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं
   (ग) व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **जीव-स्तर का बढ़ता अंतर किसे जन्म दे रहा है–**
   (क) सुख और शांति को (ख) आक्रोश और अशांति को
   (ग) प्रेम और सद्भाव को (घ) इन सभी को।

**उत्तर–** **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ख)।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

**निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–***

1. **'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ के लेखक हैं–**
   (क) दिनकर प्रसाद (ख) ज़ाबिर हुसैन
   (ग) श्यामाचरण दुबे (घ) राहुल सांकृत्यायन।
2. **इस पाठ के अनुसार लेखक किस ओर ध्यान दिला रहे हैं–**
   (क) उपभोक्ता संस्कृति हमारे लिए खतरनाक है
   (ख) उपभोक्ता संस्कृति के परिणाम सुखद हैं
   (ग) विदेशी संस्कृति अस्वीकार्य है
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
3. **इस पाठ के अनुसार लोगों की दृष्टि में सुख क्या है–**
   (क) मस्त रहना ही सुख है
   (ख) प्रभु शक्ति में ही सुख है
   (ग) उपभोक्तावाद ही सुख है
   (घ) संयमित जीवन ही सुख है।
4. **गांधी जी ने दरवाजे-खिड़कियाँ खुली रखने की बात की थी–**
   (क) लघु उद्योगों के लिए
   (ख) स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए
   (ग) महज दिखावे के लिए
   (घ) विदेशी उपनिवेश के लिए।
5. **हमारी मानसिकता को जो तंत्र बदल रहा है, वह है–**
   (क) विज्ञापन तंत्र (ख) राजतंत्र
   (ग) आधुनिक तंत्र (घ) प्रजातंत्र।
6. **हमारे द्वारा अपनाई गई दासता है–**
   (क) वैचारिक दासता (ख) आर्थिक दासता
   (ग) सांस्कृतिक दासता (घ) बौद्धिक दासता।
7. **लेखक श्यामाचरण दुबे का जन्म कब हुआ–**
   (क) 1936 में (ख) 1922 में
   (ग) 1999 में (घ) 1908 में।
8. **भारत में पहले से ही किस संस्कृति के तत्त्व रहे हैं–**
   (क) पाश्चात्य संस्कृति के (ख) सामंती संस्कृति के
   (ग) पूर्वी संस्कृति के (घ) इनमें से कोई नहीं।
9. **हम किसके उपनिवेश बन गए हैं–**
   (क) पाश्चात्य संस्कृति के (ख) अमेरिका के
   (ग) विज्ञापन कंपनी के (घ) इनमें से कोई नहीं।
10. **गांधी जी के अनुसार दरवाज़े-खिड़की खुले रखने के लिए किस पर कायम रहना जरूरी है–**
   (क) अपने सम्मान पर (ख) अपनी शर्तों पर
   (ग) अपनी सीख पर (घ) अपनी बुनियाद पर।
11. **लेखक के अनुसार आज समाज में हर जगह क्या नई चीज़ स्थापित हो रही है–**
   (क) जीवन-शैली (ख) लघु उद्योग
   (ग) विदेशी कंपनियाँ (घ) इनमें से कोई नहीं।
12. **हमारी नई संस्कृति है–**
   (क) आध्यात्मिक संस्कृति (ख) अनुकरण की संस्कृति
   (ग) वैज्ञानिक संस्कृति (घ) इनमें से कोई नहीं।
13. **लेखक के अनुसार किसका क्षरण हुआ है–**
   (क) परंपराओं का (ख) आस्था का
   (ग) नास्तिकता का (घ) भौतिकता का।
14. **आधुनिकता खाद्य-पदार्थ हैं–**
   (क) चिप्स (ख) पीज़ा
   (ग) बर्गर (घ) ये सभी।
15. **हम क्या अपनाते जा रहे हैं–**
   (क) विदेशी वस्त्र (ख) विदेशी भोजन
   (ग) आधुनिकता के झूठे प्रतिमान (घ) विदेशी रहन-सहन।
16. **आज के माहौल में क्या बदल रहा है–**
   (क) हमारे धर्म (ख) हमारी शिक्षा
   (ग) हमारा चरित्र (घ) इनमें से कोई नहीं।
17. **हमारी मानसिकता को कौन बदल रहा है–**
   (क) हमारा आधुनिक भोजन (ख) हमारी नई शिक्षा
   (ग) विज्ञापन और प्रसार तंत्र (घ) हमारे राजनेता।
18. **भविष्य के लिए बड़ी चुनौती क्या है–**
   (क) गरीबी (ख) अशिक्षा
   (ग) बेरोजगारी (घ) उपभोक्ता संस्कृति।
19. **सामान्यजन भी किसे ललचाई निगाहों से देख रहा है–**
   (क) धन-दौलत को
   (ख) आधुनिक खाद्य-पदार्थों को
   (ग) उपभोक्तावादी समाज को
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
20. **पिछले वर्ष के फ़ैशन इस वर्ष अपनाना कैसी बात है–**
   (क) गर्व की (ख) शर्म की
   (ग) दुःख की (घ) सुख की।

**उत्तर–** **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (ख) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (ख) **14.** (घ) **15.** (ग) **16.** (ग) **17.** (ग) **18.** (घ) **19.** (ग) **20.** (ख)।

## भाग-2

### (वर्णनात्मक प्रश्न)

**निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–***

**प्रश्न 1 : लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?**

**उत्तर :** लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' का अर्थ केवल 'उपभोग-सुख' नहीं है, मानसिक, शारीरिक यहाँ तक कि मन को प्रसन्न करने वाली सूक्ष्म बातें भी 'सुख' के अंतर्गत आती हैं, परंतु आजकल लोग सूक्ष्म की अपेक्षा बाहरी साधन-सुख को ही 'सुख' मानने लगे हैं।

**प्रश्न 2 : आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?**

**उत्तर :** आज की उपभोक्तावादी संस्कृति दैनिक जीवन को पूरी तरह से प्रभावित कर रही है। हम वही खाते-पीते और पहनते-ओढ़ते हैं, जो विज्ञापनों में प्रसारित होता है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे उपभोग-सामग्री के दास होते जा रहे हैं। हम

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अपनी ज़रूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ाते जा रहे हैं। आज अनेक लोग तो ऐसे हैं, जो प्रभाव जमाने या प्रतिष्ठा के लिए महँगी घड़ियाँ, कंप्यूटर, म्यूज़िक सिस्टम आदि खरीद रहे हैं। धनवानों को पाँच सितारा स्तर से नीचे की वस्तुएँ, सुविधाएँ नहीं सुहातीं और निम्न या सामान्य वर्ग उन्हें ललचाई नज़रों से देखता रहता है।

उपभोक्तावादी इस संस्कृति का सबसे बुरा प्रभाव हमारे सामाजिक सरोकारों पर पड़ा है। व्यक्ति स्वकेंद्रित होता जा रहा है। सामाजिक संबंध या सामाजिक उत्तरदायित्वों की बात आज बेमानी होती जा रही है। लोगों में अशांति और आक्रोश बढ़ रहा है। विकास का महान् लक्ष्य हमसे ओझल होता जा रहा है। मर्यादाएँ और नैतिकता के मानदंड टूटते जा रहे हैं। स्वार्थ बढ़ रहा है।

**प्रश्न 3 : गांधी जी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?**

**उत्तर :** गांधी जी सामाजिक और नैतिक मर्यादाओं के प्रबल पक्षधर थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' उनका जीवन-आदर्श था। समाज में आपसी भाईचारे के लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे, उन्होंने आपसी प्रेम-संबंध बढ़ाने पर ज़ोर दिया। संयम और नैतिकता पर परंपरा वे समाज में जीवित रखना चाहते थे। भारतीय संस्कृति में त्याग, तपस्या, सदाचार को अधिक महत्त्व दिया गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति में समाज, राष्ट्र तथा परिवार सब गौण हैं, प्रमुख है तो केवल व्यक्ति। एक प्रकार से उपभोक्तावाद भारतीय संसकृति के धुर विपरीत है। गांधी जी चाहते थे कि हम अपनी बुनियाद पर दृढ़ रहें। अपनी गरिमामय संस्कृति का अनुकरण-अनुसरण करें। उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ में हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को भूलते जा रहे हैं, इसीलिए गांधी जी ने उपभोक्तावाद को चुनौती माना है।

**प्रश्न 4 : 'जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।'–पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर :** उपभोक्तावाद संस्कृति हमारे जीवन को सूक्ष्म ढंग से परिवर्तित कर रही है। इसके प्रभाव से हमारा चरित्र तक बदलता जा रहा है। हम उत्पादों का प्रयोग करते-करते उनके दास होते जा रहे हैं। हमने अब जीवन का लक्ष्य ही उपभोग को मान लिया है। जीवन में नित नए उत्पादों का प्रयोग और उपभोग ही हमारे जीवन का उद्देश्य हो गया है। इससे रिश्ते-नाते, संबंध हमारे लिए गौण हो गए हैं। हम व्यक्तिकेंद्रित हो गए हैं, केवल स्वार्थ ही हमें लक्ष्य के रूप में दिखता है। इस प्रकार जाने-अनजाने आज के माहौल में हमारा चरित्र बदल रहा है और हम उत्पादों को समर्पित होते जा रहे हैं।

**प्रश्न 5 : 'प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर :** सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक प्रकार की होती है। प्रतिष्ठा के कई रूप तो बिलकुल विचित्र ही होते हैं। उनके कारण व्यक्ति अनेक बार समाज में उपहास का पात्र भी बनता है। उदाहरणस्वरूप अमेरिका में लोग मरने से पहले अपनी समाधि का प्रबंध करने लगे हैं। वे अच्छा-खासा पैसा इस बात पर व्यय करते हैं कि यह सुनिश्चित कर सकें कि उनकी समाधि के आस-पास हरियाली होगी और मधुर संगीत भी बजता रहेगा।

**प्रश्न 6 : कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी०वी० पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं। क्यों?**

**उत्तर :** टी०वी० पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन वास्तव में बड़े आकर्षक और प्रभावशाली होते हैं। उनकी ध्वनि और चित्र हमारे मन-मस्तिष्क को लुभा लेते हैं, विज्ञापित की जा रही वस्तु के प्रति हमारे मन में आकर्षण जगा देते हैं, ललक पैदा कर देते हैं। इनका सबसे अधिक शिकार कोमल-हृदय बालक, बच्चे और महिलाएँ होती हैं, परंतु पुरुष भी इससे अछूते नहीं रह गए हैं। 'खाए जाओ, खाए जाओ', 'सर्दी-सिरदर्द जाओ भूल, ठंडा-ठंडा कूल-कूल' जैसे आकर्षक विज्ञापन उपभोक्ता को व्यय करने पर विवश कर देते हैं।

**प्रश्न 7 : आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।**

**उत्तर :** वस्तुओं को खरीदने का एक ही आधार होना चाहिए–उसकी गुणवत्ता। विज्ञापन वस्तु की गुणवत्ता का परिचय दे सकते हैं, परंतु वे उससे अधिक हमें भ्रम में डालते हैं, क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य वस्तु को बेचना होता है। वे आकर्षक वाक्यों, दृश्यों, पैकिंग आदि के बल पर हमें भ्रमित करते हैं। उदाहरणतया–ब्लेड के विज्ञापन में लड़कियों का होना बेमाने लगता है, परंतु जिस ब्लेड की प्रशंसा करने वाली लड़की अधिक आकर्षक लगती है, लोग वही ब्लेड खरीदते हैं, जबकि ब्लेड की धार आदि का ज्ञान विज्ञापन से होना संभव ही नहीं। उपभोक्ता हर बार नए ब्लेड का प्रयोग करता रह जाता है।

**प्रश्न 8 : धीरे-धीरे क्या बदल रहा है?**

**उत्तर :** धीरे-धीरे हमारे जीने का रंग-ढंग बदल रहा है। हम उपभोक्तावादी बनते जा रहे हैं। हम उपभोक्ता वस्तुओं को भोगने में ही अपने जीवन का सुख देखने लगे हैं तथा उत्पादों के लिए जीने लगे हैं।

**प्रश्न 9 : उपभोक्तावादी जीवन दर्शन क्या है?**

**उत्तर :** उपभोक्तावादी जीवन-दर्शन से अभिप्राय है–वह जीवन-शैली, जिसमें उपभोक्ताओं का सारा ध्यान उपभोग की वस्तुओं पर ही होता है। वह उपभोग को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। इस जीवन-दर्शन से आशय यह है कि मनुष्य उपभोग के लिए इस संसार में आया है। जिस मनुष्य के पास जितने अधिक भोग के साधन तथा उत्पाद हैं, वह उतना ही योग्य और सुखी है। समाज में उसका मान-सम्मान उतना ही ज़्यादा होता है।

**प्रश्न 10 : सुख की व्याख्या बदल गई है। कैसे?**

**उत्तर :** भारतीय समाज में 'सुख' को पहले मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक आनंद से जोड़कर देखा जाता था, परंतु आजकल उपभोग के साधनों को भोगना ही 'सुख' माना जाता है।

**प्रश्न 11 : मनुष्य का चरित्र आज किस प्रकार बदल रहा है?**

**उत्तर :** आज हम उपभोक्ता वस्तुओं के उपभोग को ही जीवन का वास्तविक सुख मानते हैं, इन वस्तुओं के उपभोग को ही अपनी मान-प्रतिष्ठा का मापदंड मानते हैं, जबकि ये सुख के साधन हैं ही नहीं और न ही मान-प्रतिष्ठा का इनसे कोई लेना-देना है। सुख के संदर्भ में बनी हमारी इस सोच का परिणाम उपभोक्तावादी जीवन-दर्शन है, जो मनुष्य के चरित्र को बदल रहा है।

**प्रश्न 12 : अमेरिका के अनुकरण की चर्चा भारत में क्यों हो रही है?**

**उत्तर :** अमेरिका के अनुकरण की चर्चा भारत में इसलिए हो रही है, क्योंकि उपभोक्तावादी संस्कृति का जो रूप वहाँ है, वह धीरे-धीरे उपभोग की वस्तुओं के साथ भारत में भी अपना असर दिखाने लगा है। अमेरिका में लोग सुख-सुविधा के साधनों के पीछे दीवानों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

की तरह भाग रहे हैं। यहाँ तक कि अपने अंतिम संस्कार और अंतिम विश्राम (समाधि) की व्यवस्था भी करने लगे हैं। लेखक को आशंका है कि कल को भारत में भी यह सब होगा।

**प्रश्न 13 : लेखक ने विशिष्ट जन का समाज किसे कहा है?**

**उत्तर :** उपभोक्तावादी समाज ऐसे लोगों का समूह है, जिनके पास अत्यधिक धन-संपत्ति है, अपनी धन-संपत्ति और उपभोक्तावादी सोच के कारण ये शेष मानव समाज से पृथक् अपना विशेष स्थान रखते हैं। इन्हीं लोगों को लेखक ने विशिष्टजन कहा है। ये विशिष्टजन ही उपभोक्तावाद को बढ़ावा देते हैं, ये ही उसके नेता और प्रणेता हैं। इसी उपभोक्तावादी समाज को 'विशिष्ट समाज' कहा गया है।

**प्रश्न 14 : विशिष्टजन समाज का सामान्यजन पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

**उत्तर :** विशिष्टजन समाज का सुख-वैभव देखकर सामान्यजन भी उसका अनुकरण करने की सोचता है। वह भी उसकी ही तरह उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर बढ़ने लगता है।

**प्रश्न 15 : सामंती-संस्कृति से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर :** सामंती संस्कृति से अभिप्राय है–ऐसी जीवन-शैली, जिसे सामंत लोग अपनाते थे। सामंती संस्कृति में प्रभुत्वसंपन्न, धन सामंतों की तूती बोलती थी। वे भोग-विलास को अपना जीवन-लक्ष्य मानते थे। सामान्य जनता का उत्तरदायित्व यह था कि वह उनके भोग की सामग्री जुटाए, उसका उत्पादन करे। इस प्रकार गेहूँ के साथ बथुए को भी पानी लग जाता था। धन के प्रभाव के आगे सामान्य जनता का मुँह खोलना व्यर्थ था।

**प्रश्न 16 : सामंती संस्कृति का मुहावरा बदलने का अर्थ क्या है?**

**उत्तर :** सामंती संस्कृति का मुहावरा बदलने का अर्थ है–सामंती जीवन-शैली का रूप बदलना। आज सामंती संस्कृति का रूप बदल गया है। आज सामंतों का स्थान पूँजीपति और राजनेता वर्ग ने ले लिया है। पहले सामंत अपने अधीनस्थ के माध्यम से मजदूरों और किसानों का शोषण करते थे। आज यही कार्य समाज का पूँजीपति और राजनेता वर्ग कर रहा है। इस प्रकार आज भी स्थिति वही है, केवल उसका रूप बदला है। आज की उपभोक्तावादी संस्कृति ही सामंती संस्कृति है। पहले सामंत उपभोग पर अपना एकाधिकार मानते थे। उनके उपभोग की वस्तुओं के उत्पादक गरीब मज़दूर-किसान थे, किंतु आज सामंत-पूँजीपतियों ने उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन को अपने हाथ में रखा है। वे इन वस्तुओं का उपभोग स्वयं तो करते ही हैं, समाज के सामान्यजन को भी उसके उपभोग के लिए ललचाते हैं, क्योंकि इसी में उनका हित है। इस प्रकार बदले हुए रूप में सामंती संस्कृति की मनमानी आज भी चल रही है।

**प्रश्न 17 : 'कड़वा सच' क्या है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर :** आज हम भारतीय अपनी प्राचीन परंपराओं और विचारों-संस्कारों को त्यागकर पश्चिम से आई उपभोक्तावादी संस्कृति को स्वीकार कर रहे हैं। एक प्रकार से हम बौद्धिक रूप से उसकी गुलामी को स्वीकार कर रहे हैं। भौगोलिक स्वतंत्रता तो हमने प्राप्त कर ली, परंतु वैचारिक दृष्टि से हम पश्चिम की दासता से अब भी मुक्त नहीं हो सके हैं। हम आज भी पश्चिमी संस्कृति के साम्राज्य के अंग बने हुए हैं। लेखक ने इसे ही कड़वा सच कहा है।

**प्रश्न 18 : बौद्धिक दासता क्या है? इसका शिकार कौन हो रहा है?**

**उत्तर :** बौद्धिक दासता से आशय है–अपनी सोच को औरों की सोच की तुलना में कम मानकर उसे दरकिनार करके औरों की सोच को अपना लेना। भारत आजकल इसका शिकार हो रहा है।

**प्रश्न 19 : 'सांस्कृतिक उपनिवेश' की धारणा को स्पष्ट करते हुए बताइए कि हम भारतीय किस प्रकार उसके शिकार हो रहे हैं?**

**उत्तर :** जब कोई धनी-मानी विजेता देश विजित देशों पर अपना शासनतंत्र स्थापित करता है तो शासकवर्ग वहाँ अपनी व्यापारिक और प्रशासनिक गतिविधियों के साथ-साथ अपनी संस्कृति को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार उन देशों में उनकी संस्कृति अपने पैर-पसार लेती है। इस प्रकार विजित देश के लोग उसे स्वीकार करके अपनी पहचान, अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को भुला देते हैं, तब वह देश विजेता देश का 'सांस्कृतिक उपनिवेश' कहलाता है। एक प्रकार से अपनी संस्कृति का प्रसार करके विजेता देश वहाँ अपनी संस्कृति का भी साम्राज्य स्थापित कर लेता है।

**प्रश्न 20 : 'छद्म आधुनिकता' से क्या अभिप्राय है? कौन उसकी गिरफ़्त में है और क्यों?**

**उत्तर :** 'छद्म आधुनिकता' से अभिप्राय है–आधुनिक होने का प्रदर्शन या दिखावा करना। हम भारतीय पश्चिमी देशों की जीवन-शैली को अपना आदर्श मान चुके हैं, इसलिए हम उन्हीं देशों के निवासियों की तरह आधुनिक दिखना चाहते हैं। यही कारण है कि हम उनकी गिरफ़्त में आ गए हैं।

**प्रश्न 21 : विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता को कैसे बदल रहे हैं?**

**उत्तर :** विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म-तंत्र अत्यंत मनोहारी एवं सम्मोहक हैं। इनके प्रभाव में आने वाला व्यक्ति जल्दी ही इनके वश में हो जाता है। आजकल के विज्ञापन हमारी सोच पर हावी हो रहे हैं। हम वही वस्तु खरीदते हैं, जिसका विज्ञापन हमें सबसे अधिक लुभाता है। इस प्रकार विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म-तंत्र हमारी मानसिकता को बदल रहे हैं।

**प्रश्न 22 : किस संस्कृति का फैलाव हमारे लिए चिंता का विषय है और क्यों?**

**उत्तर :** उपभोक्तावादी संस्कृति का फैलाव हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि भोगवाद के बढ़ते कदमों के कारण देश के सीमित संसाधन लगातार घट रहे हैं। इनका दुरुपयोग हो रहा है तथा इस कारण से लोगों के सामाजिक संबंध और सरोकार कम होते जा रहे हैं। समाज के वर्गों में अंतर बढ़ता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अशांति और आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

**प्रश्न 23 : 'संस्कृति अस्मिता' किसे कहते हैं? उसका ह्रास क्यों हो रहा है?**

**उत्तर :** 'सांस्कृतिक अस्मिता' से अभिप्राय है–अपनी संस्कृति की पहचान; वे संस्कारगत विशेषताएँ, जिनके कारण कोई व्यक्ति किसी समाज-विशेष का अंग माना जाता है। जैसे कि भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान अर्थात् सांस्कृतिक अस्मिता है–हमारी वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, अतिथि-सत्कार, शादी-विवाह के रीति-रिवाज और हमारी एकता, भाईचारा तथा सर्वधर्म समभाव आदि। आजकल भोगवाद की भावना इतनी प्रबल हो गई है कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासतों को सँभालने से कतरा रहे हैं। इसीलिए हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का दिन-पर-दिन ह्रास होता जा रहा है।

**प्रश्न 24 : 'उपभोक्तावाद की संस्कृति और विज्ञापन' विषय पर दस वाक्य लिखिए।**

**उत्तर :** उपभोक्तावाद की संस्कृति में विज्ञापनों का स्थान अत्यत महत्त्वपूर्ण है। विज्ञापन उपभोक्तावाद को बढ़ावा देते हैं। वे वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाते हैं। लोगों में उत्पादन के प्रति लालच उत्पन्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करते हैं। उनके मन में उत्पाद की अनिवार्यता का संसार रचते हैं। लोग अनिवार्यता समझकर अब उत्पाद को खरीदते रहने के लिए विवश हो जाते हैं। अब शुरू होती है भोगते चले जाने की प्रक्रिया। हर विज्ञापन में उसी वस्तु को नया या उससे बेहतर होने का दावा भी किया जाता है। उपभोक्ता नई और बेहतर वस्तु ही खरीदना चाहता है, पुरानी वस्तु उसे बेकार लगने लगती है। साबुनों या टूथ-पेस्ट के विभिन्न प्रकार के विज्ञापन यही प्रमाणित करते हैं कि विज्ञापन उपभोक्तावाद की रीढ़ हैं।

**प्रश्न 25 : पाँच सितारा सुविधाओं की आज के समय में क्या अहमियत है और क्यों?**

**उत्तर :** पाँच सितारा सुविधाओं की आज के समय में अहमियत बहुत अधिक है। यह सही है कि पाँच सितारा सुविधाएँ भोगने को एक फ़ैशन-सा चल पड़ा है। इसका कारण यह है कि आज पाँच सितारा सुविधाएँ प्रतिष्ठा और हैसियत का प्रतीक बन गई हैं। लोग भोजन, इलाज, पढ़ाई, पर्यटन, शादी-विवाह सबके लिए पाँच सितारा सुविधाएँ चाहने लगे हैं। यहाँ तक कि पब्लिक स्कूल (जनता विद्यालय) तक पाँच सितारा वाली गुणवत्ता से युक्त होने लगे हैं।

**प्रश्न 26 : भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास के लेखक ने कौन-कौन से कारण माने हैं?**

**उत्तर :** लेखक ने भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास के अनेक कारण माने हैं, जो इस प्रकार हैं–

(i) भारत में पहले से ही सामंती संस्कृति का आधार रहा है। यह संस्कृति उपभोक्तावादी संस्कृति को सहारा दे रही है। लेखक मानता है कि सामंत बदल गए हैं, परंतु संस्कार अब भी वही हैं।

(ii) पश्चिम का अंधानुकरण। भारत लोग पश्चिम देशों की संस्कृति को अपने से बेहतर मानकर उसे अपनाते जा रहे हैं तथा अपनी स्वस्थ गरिमामयी परंपराओं का परित्याग कर रहे हैं।

(iii) आधुनिक कहलाने की अंधी दौड़ में अब भागे जा रहे हैं

(iv) टी०वी०, रेडियो, समाचार-पत्र आदि पर विभिन्न उत्पादों के विज्ञापनों को देख-सुनकर सब उन्हें अपनाने में लगे हैं।

**प्रश्न 27 : भारतीय संस्कृति की नियंत्रक शक्तियाँ कौन-सी हैं, जोकि अब क्षीण होती चली जा रही हैं? ऐसा किसके प्रभाव से हो रहा है?**

**उत्तर :** भारतीय संस्कृति की नियंत्रक शक्तियाँ हैं–धर्म, परंपराएँ एवं आस्थाएँ। आज भारत के लोगों का इन पर से ही विश्वास उठ गया है। पश्चिम की देखा-देखी धर्म को ढोंग और अंध-श्रद्धा कहा जा रहा है। मंदिर, पुजारी और साधु-संन्यासी सब पर शंका की दृष्टि रखी जा रही है। पुरानी परंपराएँ, रीति-रिवाज और आस्थाएँ खंडित होती जा रही हैं। लोग अपने देश की संस्कृति को छोड़कर पश्चिम की संस्कृति के अनुसार चलने में स्वयं को आधुनिक मानते हैं।

आज भारतीयों का यह आचरण पश्चिम से आई उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव का परिणाम है।

**प्रश्न 28 : 'छद्म आधुनिकता' की भारतीयों के संबंध में व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर :** 'छद्म आधुनिकता' का शाब्दिक अर्थ है–नकली या झूठी आधुनिकता। आज भारतीय समाज आधुनिकता से तो दूर है, परंतु छद्म आधुनिकता से अवश्य आक्रांत है अर्थात् भारतीय आज मन से तो आधुनिक नहीं है, परंतु पूरी तरह से आधुनिक दिखने के प्रयास में लगे हैं। वे आधुनिकतम वस्त्र पहनते हैं, आधुनिक घरेलू साज-सामान, उपकरण आदि खरीदते हैं। अपनी जीवन-शैली, यहाँ तक कि बोलचाल, उठने-बैठने तक में पश्चिम की नकल में लगे हैं। वे पश्चिम की हर वस्तु को आधुनिक मानकर, उसे अपनाकर अपनी आधुनिकता सिद्ध करना चाहते हैं, जबकि हम जानते हैं कि केवल दिखावा करना आधुनिकता नहीं है। उदाहरण के लिए हम आज अपने बच्चों को छोटे-से-छोटे आधुनिकतम वस्त्र पहनाकर स्वयं को आधुनिक कहलाना चाहते हैं, किंतु हम अपने इन्हीं बच्चों से यह अपेक्षा भी करते हैं कि वे हमारा आदर करें, शालीनता का आचरण करें, हमारी सब बातें मानें, मर्यादाओं की सीमा में रहें। वास्तविकता यह है कि ये दोनों चीज़ें एक साथ संभव नहीं हैं, फिर भी हम कर रहे हैं। यही 'छद्म आधुनिकता' है, जो किसी भी प्रकार से उचित नहीं है।

# अभ्यास प्रश्न

***निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–***

अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है, जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़?

**1. किसका घोर अपव्यय हो रहा है–**

(क) धन का (ख) अन्न का
(ग) सीमित संसाधनों का (घ) हमारी शक्ति का।

**2. पीज़ा और बर्गर को लेखक ने क्या कहा है–**

(क) पौष्टिक खाद्य (ख) कूड़ा खाद्य
(ग) स्वादिष्ट खाद्य (घ) श्रेष्ठ खाद्य।

**3. दिखावे की संस्कृति के फैलने से क्या होगा–**

(क) सामाजिक अशांति बढ़ेगी
(ख) सामाजिक शांति बढ़ेगी
(ग) सामाजिक समृद्धि बढ़ेगी
(घ) सामाजिक पतन होगा।

**4. उपभोक्तावादी संस्कृति का क्या परिणाम हो रहा है–**

(क) मर्यादाएँ टूट रही हैं
(ख) नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं
(ग) व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है
(घ) उपर्युक्त सभी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5. **जीव-स्तर का बढ़ता अंतर किसे जन्म दे रहा है–**
   (क) सुख और शांति को (ख) आक्रोश और अशांति को
   (ग) प्रेम और सद्भाव को (घ) इन सभी को।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **गांधी जी ने दरवाजे-खिड़कियाँ खुली रखने की बात की थी–**
   (क) लघु उद्योगों के लिए
   (ख) स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए
   (ग) महज दिखावे के लिए
   (घ) विदेशी उपनिवेश के लिए।
7. **आज के माहौल में क्या बदल रहा है–**
   (क) हमारा धर्म (ख) हमारी शिक्षा
   (ग) हमारा चरित्र (घ) इनमें से कोई नहीं।
8. **पिछले वर्ष के फ़ैशन इस वर्ष अपनाना कैसी बात है–**
   (क) गर्व की (ख) शर्म की
   (ग) दुःख की (घ) सुख की।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **'प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**
10. **उपभोक्तावादी जीवन दर्शन क्या है?**
11. **सामंती संस्कृति का मुहावरा बदलने का अर्थ क्या है?**
12. **'छद्‌म आधुनिकता' से क्या अभिप्राय है? कौन उसकी गिरफ़्त में है और क्यों?**

●

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in